Case Study 1965 के युद्ध में NCC कैडेट्स की भूमिका

परिचय

1. अप्रैल 1965 से सितंबर 1965 के बीच भारत-पाक युद्ध लड़ा गया। संघर्ष पाकिस्तान के ऑपरेशन जिब्राल्टर के बाद शुरू हुआ, जिसे भारतीय शासन के खिलाफ विद्रोह को बढ़ावा देने के लिए जम्मू और कश्मीर में सेना की घुसपैठ के लिए बनाया गया था। भारत ने पश्चिम पाकिस्तान पर एक पूर्ण पैमाने पर सैन्य हमले शुरू करके जवाबी कार्रवाई की।

2. जबकि पाकिस्तान के साथ 1965 के युद्ध में सशस्त्र बलों की भूमिका अच्छी तरह से प्रलेखित है, राष्ट्रीय कैडेट कोर ने भी इसमें बढ़ चढ़ के हिस्सा लिया । 9 सितंबर 1965 को प्रकाशित एक असाधारण राजपत्र में, सरकार ने 17 वर्ष या उससे अधिक आयु के वरिष्ठ प्रभाग के राष्ट्रीय कैडेट कोर अधिकारियों (वरिष्ठ, जूनियर और लड़कियों के प्रभाग) और कैडेटों (लड़कियों सहित) को लड़ाई में योगदान के लिए आदेश दिया ।

युद्ध में एनसीसी की भूमिका

3. एनसीसी कैडेटों ने 1965 के भारत-पाक युद्ध के दौरान विभिन्न कार्यों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। प्रत्येक एनसीसी कैडेट इस अवसर पर पहुंचे, उन्होंने पुलिस, प्रादेशिक सेना और रक्षा सेवा के कर्मियों को सहर्ष निश्चिंत किया कि वे देश की रक्षा के महत्वपूर्ण कार्यों को अंजाम दें। कैडेट नागरिक सुरक्षा कार्यों में लगे हुए थे और उन्होंने विभिन्न क्षेत्रों में नागरिक और सैन्य अधिकारियों की सहायता की: -

(ए) सिविल डिफेंस गश्ती सहित सिविल डिफेंस पोस्ट और आउट पोस्ट की मैनिंग ।

(बी) स्थैतिक संकेत प्रतिष्ठानों की मैनिंग।

(सी) मैसेंजर सेवा।

(डी) अस्पताल में ड्यूटी।

(इ) नागरिक आबादी के हरकत के मामले में प्रशासन और शिविर चलाना।

(एफ) किसी भी अन्य संबद्ध कर्तव्य।

4. इन कर्तव्यों को कैडेटों ने पूरे जोश और उत्साह के साथ निभाया। कैडेटों ने पश्चिमी सीमाओं के साथ बांध बनाने में भी मदद की। आकाशवाणी, टेलीफोन एक्सचेंज और डाकघरों जैसे महत्वपूर्ण प्रतिष्ठानों में कैडेट गार्ड थे।

5. कैडेटों द्वारा प्रदर्शित साहस और कर्तव्य के प्रति समर्पण का सबसे उत्कृष्ट उदाहरण 13 सितंबर, 1965 को गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर देखा गया जहाँ चार पाकिस्तानी विमानों द्वारा ज्वलनशील सामग्री, डीजल, और मिट्टी का तेल जैसे ज्वलनशील पदार्थ ले जा रही मालगाड़ी पर हवाई हमला किया गया था।

<u>सार्जेंट प्रताप सिंह की बहादुर कार्रवाई</u>

6. 13 सितंबर 1965 को, गुरदासपुर रेलवे स्टेशन पर डीजल तेल और अन्य विस्फोटक सामग्री ले जा रही एक मालगाड़ी को चार पाकिस्तानी विमानों द्वारा बम से उड़ा दिया गया था, जिसके कारण एक वैगन में डीजल तेल में आग लग गयी । आग ने इतनी प्रचंड लपटें पैदा कीं कि रेलवे स्टेशन के आसपास का पूरा इलाका धुएं के घने काले बादल से ढक गया जिससे इलाके में दहशत और खौफ फैल गया।

7. सार्जेंट प्रताप सिंह (संख्या: 1148011) और 59 अन्य एनसीसी कैडेट अपने जीवन के बारे में दूसरा विचार दिए बिना घटनास्थल पर पहुंचे। सार्जेंट प्रताप सिंह के स्पष्ट मार्गदर्शन में कैडेटों ने तेजी से जलते हुए वैगनों से अप्रभावित वैगन को रोकना शुरू कर दिया और आग को फैलने से रोकने के लिए धक्का दिया।

8. 60 कैडेटों द्वारा कार्रवाई के दौरान न केवल डीजल से आग लगी वैगन को अलग किया, बल्कि उन्होंने गोला बारूद से भरी वैगनों को भी अलग कर दिया था जिससे एक बड़ा विस्फोट होने से बच गया था।

9. भारतीय सेना की अग्रिम पंक्ति के लिए एनसीसी कैडेटों की समय पर प्रतिक्रिया भी महत्वपूर्ण थी क्योंकि रेलवे ट्रैक को हुए नुकसान की वजह से ईंधन और गोला-बारूद दोनों को सेना के कार्यों के लिए फिर से शुरू होने में लंबा समय लगता ।

10. कैडेटों द्वारा कर्तव्य के प्रति समर्पण, जिन्होंने अपने जीवन को जोखिम में डाला, की वजह से अंततः गुरदासपुर शहर को एक भयानक क्लेश से बच गया । 10 वीं पंजाब बटालियन एनसीसी गुरदासपुर के कैडेट सार्जेंट प्रताप सिंह ने आपातकाल के समय सरासर नेतृत्व और बहादुरी के गुण दिखाए, जिसके लिए उन्हें 1966 में भारत के राष्ट्रपति डॉ। राधा कृष्णन द्वारा अशोक चक्र वर्ग III (शौर्य चक्र) से सम्मानित किया गया।

7. PB/SD/1148011 Sergeant PARTAP SINGH,
National Cadet Corps.

(*Effective date of award*—13*th September* 1965)

On 13th September 1965, four Pakistani planes bombed and strafed a goods train carrying diesel oil and other explosives and inflammable material at Gurdaspur railway station, setting fire to a wagon containing diesel oil. The burning oil threw out huge flames and the entire area surrounding the railway track was shourded by a thick cloud of smoke causing panic and confusion in the locality.

Collecting about 59 other NCC Cadets, Sergeant Partap Singh rushed to the scene of the fire. Unmindful of their personal safety, the cadets, under the inspiring leadership of Sergeant Partap Singh, set themselves to the task of detaching the unaffected wagons from the burning wagon and pushing them away to a safe distance. During this action, Sergeant Partap Singh displayed leadership, courage and initiative and set an inspiring example to the other cadets.